Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2025, E-Journal, Vol. I, Issue L (50), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

भारतीय इतिहास में मेवाड़ की वीरांगना किरण देवी का गौरवशाली स्थान और मुगल अकबर की पराजय

सौरभ पटेल* डॉ. हेमेन्द्र सिंह सारंगदेवोत**

* सहायक आचार्य (समाज शास्त्र) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत
** सह आचार्य (इतिहास) मेवाड़ विश्वविद्यालय, गंगरार, चित्तौड़गढ़ (राज.) भारत

शोध सारांश – मेवाड़ महाराणा प्रताप के अनुज भ्राता शक्तिसिंह की कन्या–वीरांगना किरणदेवी का ऐतिहासिक महत्व रहा हैं जो कि जीवन मूल्य, नारी सशक्तिकरण और चरित्र व राष्ट निर्माण से सम्बद्ध रहा हैं जो गाथा आज भी मेवाड़ी जनमानस के मुख पर बिराजित हैं। इन्होंने अपने पतिव्रता धर्म की तेजस्विता से कामांध मुगल अकबर को पराजित किया और उसमें नारी शक्ति के प्रति पवित्रता व सम्मान के भाव जागृत किये।

शब्द कुंजी – किरण देवी, राज कँवर, मेवाड़, शक्तिसिंह, राणा प्रताप, नारी धर्म, पतिव्रता, सिसोदिया, मुगल अकबर,नौरोज के मेले, मीना बाजार।

प्रस्तावना –अपने सतीत्व और पतिव्रत धर्म की रक्षा करना ही भारतीय स्त्रियों के जीवन का एक अनुपम और पवित्र धर्म रहा है। रामायण जी के सीता माँ हो या फिर तमिल संगम साहित्य में उल्लिखित पतिव्रता सती कन्नगी हो, उनके सतीत्व वज्राघात से बड़े–बड़े साम्राज्यों की नींव हिल उठी, राजमुकुट धूल–धूसरित हो गए, मानव वेशधारी दानवों की दानवता और व्यभिचारमूलक अत्याचार का अन्त हो गया । किरणदेवी मेवाड़ी हिंदुआ सूर्य महाराणा प्रताप के भाई शक्तिसिह की कन्या थी।

किरण देवी के पिताश्री महाराज शक्ति सिंह सिसोदिया

मेवाड़ के भींडर ठिकाने के प्राचीन अभिलेखों के अनुसार महाराज शक्ति सिंह सिसोदिया के 17 पुत्र और दो पुत्रियाँ थी जिनमें से एक किरण देवी का विवाह बीकानेर महाराजा के छोटे भाई महाराज पृथ्वीराज राठौड़ से हुआ था, जिनकी कविता या चेतावनी के दोहों ने राणा प्रताप में पुन: रजपूती का जोश ला दिया था,फलत: फिर उन्होंने किसी भी हालत में अकबर से सन्धि की बातचीत नहीं की थी। बांसी ठिकाने के हस्तलिखित ग्रन्थों के अनुसार महाराज शक्ति सिंह की पुत्री का नाम राज कंवर बाई था जिनका विवाह बीकानेर महाराज के भाई पृथ्वीराज राठौड़ से हुआ था। इसका अर्थ यह हुआ कि राज कँवर बाई का नाम किरण देवी भी मिलता हैं।

अकबर की विषैली राजनीति के क्लोरोफार्म से मतवाले होकर बड़े–बड़े राजपूत घरानों ने अपनी सांस्कृतिक परम्परा, मर्यादा और मान की उपेक्षा करना प्रारम्भ कर दिया था, मेवाड को छोड़कर अन्य राजपूत रियासतों ने अकबर का लोहा मान लिया था। पृथ्वीराज अपनी इस वीर रानी के साथ दिल्ली में ही रहते थे । किरणदेवी परम सुन्दरी और सुशीला थी। अकबर उसे अपनी वासना का शिकार बनाना चाहता था, वह शक्तिशाली सम्राट अवश्य था किन्तु कामाग्नि भी उसके हृदय में रात–दिन धधका करती थी। दिल्ली के शक्तिशाली सम्राट की अभिलाषाओं की पूर्ति में बाधक होने के लिये काफी शक्ति और साधन सम्पन्नता की आवश्यकता थी ।

अपनी विषय–वासना संतुष्टि हेतु मुगलिया अकबर प्रतिवर्ष 'नौरोज' का मेला लगवाता था। दिल्ली निवासियों सहित मुगलों के हिन्दू व मुस्लिम मनसबदारों की महिलायें भी मेले के बाजार में जाया करती थी। पुरुषों को मेले में जाने की आज्ञा नहीं थी। अकबर स्त्री वेश में इस मेले में घूमा करता था,जिस सुन्दरी पर अकबर मुग्ध होकर कामासक्त हो जाता था,उसे उसकी कुट्टिनियां फंसाकर उसके महल में ले जाती थी ।

अकबर की गिद्ध दृष्टि बहुत दिनों से किरणदेवी पर लगी हुई थी। उसे सीसोदिया राजघराने की इस सिंहनी की वीरता का पता नहीं था। वह नहीं जानता था कि भारतीय नारियों ने अपने सतीत्व की रक्षा के लिये अपने प्राणों तक को चिता में अर्पित कर बलिदान कर दिया है। महारानी पद्मिनी, राजमाता कर्मावती की चिता की जलती राखतक का दर्शन विदेशी तुर्क, अफगान आक्रान्ताओं की पापी आंखों ने नहीं किया था।

एक दिन जब 'नौरोज' के मेले में मीना बाजार की सजावट देखने के

लिये किरणदेवी आयी तो कुट्टिनियों ने अकबर के संकेत से उस पतिव्रता को धोखे से जनाने महल पर पहुंचा दिया। विषयान्ध मुगल अकबर ने उसे घेर लिया और नाना प्रकार के प्रलोभन दिये। किरणदेवी की तेजस्विता की प्रखर किरणों से अकबर की काम-वासना भभकती जा रही थी। ज्यों ही उसने उस राजपूत रमणी का अङ्ग स्पर्श करने के लिये हाथ हिलाया, त्यों ही उस रणचण्डी ने कमर से तेज कटार निकाली और शुम्भ-निशुम्भ की तरह उसे धरती पर पटक कर छाती पर पैर रखकर कहा- 'नीच !नराधम ! भारत का सम्राट होते हुए भी तूने इतना बड़ा पाप करने की कुचेष्टा की! भगवान ने सती-साध्वियों की रक्षा के लिये तुझे बादशाह बनाया है और तू उन पर बलात्कार करता है। दुष्ट ! अधर्म ! तू बादशाह नहीं, नीच विषयी कुत्ता है। पिशाच है रू तुझे पता नहीं है कि मैं किस कुल की कन्या हूं। सारा भारत तेरे पाँवों पर सिर झुकाता है: परन्तु मेवाड़ सीसोदिया गुहिलोत वंश अभी भी अपना सिर ऊंचा किये खड़ा है। मैं उसी पवित्र राजवंश की कन्या हूं। मेरी धमनियों में बप्पा रावल और सांगा का रक्त है। मेरे अंग-अंग में पावन क्षत्रिय वीरांगनाओं के चरित्र की पवित्रता है। तू बचना चाहता है तो मन में सच्चा पश्चाताप करके अपनी माता की शपथ खाकर प्रतिज्ञा कर कि अब से 'नौरोज' का मेला नहीं होगा और किसी भी नारी पर तू मन नहीं चलावेगा। नहीं तो, आज इसी तेज धार कटार से तेरा काम तमाम करती हूं।'

अकबर के शरीर का खून सूख गया। पानीपत, मालवा, गुजरात और खान-देश के सेनानायक के दोनों हाथ थरथर कांपने लगे। उसने करुण स्वर में बड़ा पश्चाताप करते हुए हाथ जोड़कर कहा- 'मां ! क्षमा कर दो, मेरे प्राण तुम्हारे हाथों में है, पुत्र प्राणों की भीख चाहता है।' उसने प्रण किया कि अब ष्नौरोजष का मेला कभी नहीं लगेगा ! दयामयी किरणदेवी ने अकबर को प्राणों की भीख दे दी।

इस तरह तेजस्विनी और पतिव्रता राजपूत रमणी ने यवन के हाथों से अपने सतीत्व को रक्षा की। नौरोज का मेला और मीना बाजार अकबर के चरित्र के बड़े कलंक हैं, जिन्हें इतिहासकार कभी नहीं भूल सकते हैं।

किरणदेवी सतीत्व की प्रखर किरण थी, जिसके आलोक ने सारे देश को पतिव्रत की आभा से जगमगा दिया।कुछ इतिहासकारों का मत है कि किरणदेवी का नाम जयावती या (जोशी-बाई) था। नाम कुछ भी हो, कर्म और गुणों से ही लोगों की प्रसिद्धि होती है। इतना तो है ही कि बीकानेर के पृथ्वीराज राठौड़ की राजराणी के पतिव्रत धर्म ने दुराचारी अकबर को विवश किया कि वह उसे 'मां' कहे। इतिहास ने दिखला दिया कि अबला कहलाने वाली नारी कितनी बलवती होती है।

मेवाड़ की प्रसिद्ध विदुषी वंदना जी जोशी मेवाड़ के ऐतिहासिक कथानकों के अंतर्गत लिखती हैं कि .....आपांरी वीरांङ्गणावांकिरण देवी.....किरण देवी मेवाड़ रा महाराणा प्रतापसिंघ रै अनुज शक्तिसिंघ री बेटी ही। इण रो ब्याव बीकानेर रा महाराज पिरथीराज राठौड रै लारै व्यो। पिरथीराज राठौड प्रसिद्ध वीर, ख्यात प्राप्त कवि अर मुगल सम्राट अकबर रो मनसबदार हो।

किरणदेवी सिसोदिया अर पिरथीराज राठौड़ दोई जिण रजपूती शानौ शौकत में रेता हा। कदी-जदी अकबर रा दरबार में महाराणा प्रताप रे तेज रौ बखाण करवा सूँ नी चूकता हा। मेवाड़ी पोषाक में किरण देवी सिसोदीदो घणी रूपाली लागती ही अर वेशभूषा विण याही आजीवन राखी।

एक दन किरणदेवी नौरोज रा मेला में घूमवा गी ही। ष्नौरोजश रौ उत्सव सोला दन तक मनायो जातो हो। ईरानी परथा रै अनुसार हर नया साल री शुरूआत वैळा पै अकबर दिल्ली में इण उत्सव रौ आयोजन करतो हो। यो उत्सव अकबर आपणा राज्य में ही करतो हो। दीवाने आम में एक साठ कदम लम्बो अर चालीस कदम चौड़ो शामियानो लगायो जावतो। इण उत्सव में मीना बाजार भी लगायो जातो हो। इण बाजार में सगला अमीर उमरावा री लुगायाँ आईन वटै दुकानाँ लगाती ही अर सौदा भी ज्यादातर जनाना ही राख्या जावता। बादशाह अर विण री बेगमाँ इण बाजार में सामान खरीदवा रै वास्तै आवती। बेगमां, बेणा अर कन्या बादशाह रै भड़े बैठती ही। अर अमीर उमरावाँ री लुगाईयाँ आई आईश्न सलाम करती ही, नजरानों देती ही। इण रै लारै ही दिन रात नाच गान वैता रेता हा।

अकबर इण मेला में आयी किण भी रूपवती रै सौन्दर्य पै मुग्ध वैजातो तो विण ने राजमहल में बुलावा री कोशीश करतो। विण रूपवती लुगाई पै एक बार अकबर री नजर पड़णी चावती। पाछे तो विण रौ राजमहल में जाणौ निश्चित हो। जिण तरै ही वा लुगाई राजमहलाँ में पूंगती तो विण रौ शील भंग वैजातो हो।

एक बार किरण देवी नौरोज रा मेला में गई ही अर अकबर री नजर विण पै पड़ी गी। अकबर रौ मन किरणदेवी री वेशभूषा, चाल-ढाल अर रहन सहन पै घणो मोहित व्यो। अकबर किरण देवी ने धोखां सूँ रंगमहलाँ में बुलाई ली। अर किरण देवी भी बिन्दास जंगल री शेरणी जिण तरै महलाँ में पूंगी गी। अकबर विण एकली ने आपणा महलाँ में देखकर हर साल हर लुगाई लारै करतो, विस्तर विण रै लारै करवा लाग्यो। वो नी जाणतो हो कि या तो मेवाड़ री खूंखार शेरणी है। जिण नै जोर सूं दहाड़णो भी आवै अर पंजों मारणो भी आवे। अकबर जिण तरै ही विण रौ शील भंग करवाने आगे बढ़यो अर विण ने छूवा लाग्यो विस्तर ही सिसोदिया कुल री सिंघणी कटार लेकर अकबर री छाती पै जा चढ़ी।

दिल्ली रौ मुगल सम्राट अकबर ने इण रौ अंदेशो नी हो। आज तक विण रै चंगुल में फंसी कोई भी लुगाई अतरी फुर्तीली अर तेज तर्राट नी ही। अकबर विण वीर नारी रा तेज अर शौर्य हामें धक धक धूजवा लाग ग्यो। गिड़गिड़ावा लाग्या अर मेवाड़ री राजकुमारी किरणदेवी रै पग्गां पड़िग्यो। किरण देवी सूँ आपणा प्राणां री भीख मांगवा लाग ग्यो।

दयावती, ममता री मूरत किरणदेवी आगे सूँ कदी नौरोज रौ मेलो नी लगावा री बात मनवाई। जदी अकबर शपथ लीदी कि अबै कदी नौरोज रौ मेलो नी लगाएगा, विण कैड़े अकबर सूं खुद ने 'माँ' केलवायो। अकबर किरणदेवी ने 'माँ' कईश्न पुकारी जदी जाईश्न अकबर ने छोड्यो। इण प्रकार सूँ या राजपूत नारी न कोरी आपणै शील री रिच्छा करी वरन अकबर जस्या सम्राट सूँ नौरोज रा मेला रौ आयोजन भी बन्द करायो अर अकबर ने बन्द करवा वास्तै विवश वेणो पड्यो।

अकबर जस्या बादश्या ने विण रा घर में जाईश्न ललकारवा री हिम्मत मेवाड़ री छत्राणी ही कर सके, वा ही दूसरा रा जंगल में जाईश्न दहाड़ सके हे। महाराणा प्रताप मेवाड़ में रेईश्न अकबर ने लोहा रा चणा चबवाया तो किरण देवी अकबर रा रंगमहल में पूंगीश्न विण री सांस फुलाई दी। 'विण रै घर मेई विण रौ सांस लेणो मुश्किल वैग्यो।'

इस प्रकार भारतीय नारियों के आदर्श ने समाज का निर्माण किया जो वर्तमान में भी प्रांसगिक हैं और आगे भी रहेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. देवीलाल पालीवाल, महाराज शक्तिसिंह और बोहेड़ा के शक्तावत (ठिकाना बोहेड़ा का इतिहास), प्रकाशक कुंवर विक्रम सिंह, बोहेड़ा

हाउस, उदयपुर, 1995 ई.
2. ईश्वर सिंह राणावत, ठिकाना बांसी का इतिहास, प्रकाशक प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 2009 ई.
3. मोहब्बत सिंह राठौड़, गोकुलदासोत शक्तावतों का इतिहास, प्रकाशक प्रताप शोध प्रतिष्ठान, उदयपुर, 2017 ई.
4. Dr.Devilal Paliwal, Maharaj Shakti Singh And The Shaktawats of Boheda (A History of BohedaThikana), Book Treasure, Jodhpur, 2004 A.D
5. कल्याण के नारी विशेषांक से साभार 582-584(प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर में संग्रहित)
6. संपादक कृष्ण चन्द्र श्रोत्रिय, ईसरदान आशिया, स्वरूप सिंह चुण्डावत, देवेन्द्र सिंह शक्तावत, देवकरण सिंह रूपाहेली, गिरधर आशिया कृत सगत रासो, पृष्ठ संख्या.632-633, प्रताप शोध प्रतिष्ठान उदयपुर, 1987 ई.
7. डॉ.वंदना जोशी, आपांरी वीरांङ्गणावां, चिराग प्रकाशन, उदयपुर, 2012 ई.

****